'प्राकृत-सृष्टि के लिए भगवान् श्रीकृष्ण के अंश तीन विष्णु-रूपों में प्रकट होते हैं। सर्वप्रथम, महाविष्णु महत्तत्त्व नामक सम्पूर्ण भौतिकशक्ति का सृजन करते हैं। दूसरे पुरुषावतार गर्भोदकशायी विष्णु सब ब्रह्माण्डों में नानाविध सृष्टि करने के लिए उनमें प्रवेश करते हैं। तीसरे, क्षीरोदकशायी विष्णु परमात्मा के रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड-निकाय में सर्वव्यापक हैं। वे अणु-अणु में हैं। जो इन तीनों विष्णु-रूपों को जानता है, वह भवबन्धन से मुक्ति के योग्य है।

यह प्राकृत-जगत् श्रीभगवान् की एक शक्ति-विशेष का क्षणिक प्रकाशमात्र है। जगत् की सम्पूर्ण क्रियायें भगवान् श्रीकृष्ण के इन तीन विष्णु-रूपों द्वारा संचालित हैं। ये तीनों पुरुषावतार कहलाते हैं। सामान्यतः भगवान् कृष्ण के तत्त्व को न जानने वाले में यह धारणा रहती है कि यह जगत् जीवों के भोगने के लिए है और जीव ही प्रकृति के कारण (पुरुष), नियन्ता एवं भोक्ता हैं। भगवद्गीता के अनुसार यह अनीश्वरवादी निष्कर्ष मिथ्या है। विचारणा विषयक उपरोक्त श्लोक में उल्लेख है कि श्रीकृष्ण प्राकृत सृष्टि के आदिकारण हैं। श्रीमद्भागवत द्वारा भी यह प्रमाणित है। प्राकृत सृष्टि के घटक पँच-तत्त्व श्रीभगवान् की भिन्ना शक्तियाँ हैं। यहाँ तक कि निर्विशेषवादियों की परमलक्ष्य 'ब्रह्मज्योति' भी परव्योम में अभिव्यक्त होने वाली एक भगवत्-शक्ति मात्र है। ब्रह्मज्योति में वैकुण्ठ लोकों के समान चिद्विलास नहीं है, पर फिर भी निर्विशेषवादी इसी को अपना परमलक्ष्य मानते हैं। परमात्मा भी क्षीरोदकशायी विष्णु का अशाश्वत् सर्वव्यापक रूप है। भगवद्धाम में परमात्मा रूप की अभिव्यक्ति नित्य नहीं होती। अतः परमसत्य केवल भगवान् श्रीकृष्ण हैं। वे समग्र शक्तिमान् पुरुष हैं और नाना प्रकार की भिन्ना (बहिरंगा) और अन्तरंगा शक्तियों से युक्त हैं।

पूर्व कथन के अनुसार, अपरा-प्रकृति (भौतिक-शक्ति) आठ प्रधानरूपों में अभिव्यक्त होती है। इनमें से प्रथम पाँच, अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश को स्थूल सृष्टि कहा जाता है। इनकी सृष्टि में शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध—ये पाँच इन्द्रियविषय अन्तर्भूत रहते हैं। प्राकृत विज्ञान इन दस तत्त्वों तक सीमित है। अन्य तीनों तत्त्व (मन, बुद्धि एवं मिथ्या अहंकार) विषयियों द्वारा उपेक्षित हैं। सबके परम उद्गम—श्रीकृष्ण को न जानने के कारण मनोधर्मी दार्शनिक पूर्ण ज्ञानी नहीं हो सकते। मिथ्या अहंकार (मैं-मेरा) में, जो भवरोग का मूल कारण है विषयभोग के लिए दस इन्द्रियों का समावेश है। 'बुद्धि' शब्द महत्तत्त्व का वाचक है। इस प्रकार, इन आठ शक्तियों से जगत् के चौबीस तत्त्व अभिव्यक्त होते हैं, जो नास्तिक सांख्य के विषय हैं। ये भिन्न तत्त्व मूल रूप में श्रीकृष्ण की शक्तियों से ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु अल्पज्ञ अनीश्वरवादी सांख्य दार्शनिक श्रीकृष्ण को सब कारणों का परम कारण नहीं समझते। वास्तव में श्रीकृष्ण की बहिरंगा शक्ति की अभिव्यक्ति ही सांख्य दर्शन का विवेचनीय विषय है, जैसा भगवद्गीता में वर्णन है।

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।।५।।